International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue 2, Feb. 2013 ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

# अमृता प्रीतम : साहित्य सृजन की प्रेरणाएं

डॉ. खेमसिंह डहेरिया
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय
विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म0प्र0)

*सारांश*

*जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ जा पहुँचे कवि की जनोक्ति प्रसिद्ध है । लेखक की दृष्टि जन सामान्य की दृष्टि से भिन्न होती है। यही कारण है कि जिस बात को साहित्यकार लक्ष्य कर पाता है, वहाँ तक सामान्य व्यक्ति की सोच नही पहुँच पाती । साहित्यकार को यह सूक्ष्म निरीक्षण की शक्ति समाज से ही प्राप्त होती है। अन्यों की तरह वह भी सामाजिक प्राणी के नाते समाज से ही प्रेरणा एवं प्रकाश ग्रहण करता है । अंतर है तो साहित्यकार की अपनी भाव संवेदनाओं का । उसमें संवेदना का स्तर सामान्य से भिन्न होता है । उसकी संवेदनाएँ अधिक जागृत होती हैं। उसकी भाव संवेदनाओं को जगाने वाले कौन से कारक हैं, इसकी पड़ताल किए बिना हम उसकी रचना के साथ न्याय नहीं कर सकते। यही कारण उसके प्रेरणा श्रोत होते हैं ।*

## *प्रस्तावना*

अल्पकाल में माता का वियोग सहने वाली अमृता का लालन–पालन उनके पिता नंद साधु ने किया । नंद साधु में जहाँ एक ओर फक्कड़ाना मस्ती थी, दार्शनिक वैराग्य था, तो दूसरी ओर पिता का कठोर अनुशासन भी उनमें समाहित था। वह स्वयं अच्छे कवि एवं लेखक थे। अतः अपनी मस्ती में कभी रात –रात भर जागकर भी रचनाएँ लिखते थे । अमृता के बाल मन पर अपने पिता का गहरा प्रभाव पड़ा । उनके अवचेतन मन में काव्य सृजन के संस्कार सहज ही पड़े । अमृता जी लिखती हैं– मेरे पिता जी को मेरे कविता लिखने पर आपत्ति नहीं थी, बल्कि काफिये – रदीफ की बात मुझे मेरे पिता ने सिखायी थी, केवल उनका आग्रह था कि मैं धार्मिक कविताएँ लिखूँ और मैं आज्ञाकारी बच्ची की तरह वही दकियानूसी कविताएँ लिख देती थी (उम्र के सोलहवें साल में हर विश्वास पारम्परिक होता है, और इसीलिए दकियानूसी भी)।''1 जिस हद तक यह सब औरों के साथ होता है, अमृता जी के साथ उससे तिगुना हुआ। पहला – आसपास की मध्य श्रेणी का फीका और रस्मी रहन – सहन, दूसरा – मां के न होने के कारण हर समय मनाहियों का सिलसिला, और तीसरा– पिता के धार्मिक अगुआ होने की हैसियत में उन पर भी अत्यंत संयमी होकर रहने की पाबन्दी। इसलिए सोलहवें वर्ष से उनका परिचय उस असफल प्रेम की तरह था, जिसकी कसक सदा के लिए कहीं पड़ी रह जाती है और शायद इसलिए वह सोलहवां वर्ष भी अब उनकी जिन्दगी के हर वर्ष में कहीं–न–कहीं शामिल है । इसके रोष का पूरा रूप उन्होंने उसके बाद कई बार देखा, जिन्दगी का मुँह देखने की भटकन में उन्होंने उसी तपिश के साथ कविताएँ लिखी, जिस तपिश के साथ कोई सोलहवें वर्ष में अपने प्रिय का मुँख देखने के लिए लिखता है। सोलहवें वर्ष की यह तपिश उनमें जीवन भर बनी रही ।

**Please cite this Article as :** *खेमसिंह डहेरिया अमृता प्रीतम : साहित्य सृजन की प्रेरणाएं* **International Journal Of Creative Research Thoughts (Feb. ; 2013)**

*अमृता प्रीतम के साहित्य सृजन की प्रेरणाओं पर प्रकाश डालना समीचीन होगा–*

## 1.नंद साधु अर्थात् पिता का प्रेरक अनुशासन –

पिता के कठोर किन्तु प्रेरक व्यक्तित्व ने अमृता को लेखन के उन्नत शिखर के स्पर्श की प्रेरणाएँ दी । 1936 ई. की बात है, जब अमृता जी की पहली किताब छपी थी। महाराजा कपूरथला ने उनकी किताब को एक बुजुर्गाना प्यार देते हुए दो सौ रूपये अमृता के नाम भेजे थे। फिर कुछ दिनों बाद महारानी नाभा ने जो कभी नंदसाधु की शिष्या रही थी, एक साड़ी का पार्सल उस किताब की प्रशंसा व्यक्त करते हुए अमृता जी को भेजा था। ये दोनों चीजें डाक द्वारा आई थी और फिर एक दिन, डाकिए ने घर का दरवाजा खटखटाया। अमृता के बाल– मन ने उसी तरह के एक और मनीआर्डर या, पार्सल की आस कर ली, मुँह से निकला, 'आज फिर कोई इनाम आया है ।' और फिर उन्हें आज तक, अपने शरीर के कम्पन– सहित, उसी तरह वह त्योरी याद है, जो अमृता की ओर देखकर उनके पिता के माथे पर पड़ गई थी । उस दिन अमृता जी ने इतना नहीं समझा था कि उनके पिता उनमें जैसा व्यक्तित्व देखना चाहते थे, अमृता जी उस एक वाक्य से उससे बहुत छोटी हो गई थी।2 बस, इतना समझा था कि ऐसी आशा या ऐसी कामना गलत बात है । यह क्यों गलत है और यह किस जगह से एक लेखक को छोटा कर जाती है, यह बहुत समय बाद उनकी समझ में आया । और जब जाना, तब उनके पिता के माथे के स्थान पर उनका अपना माथा उनका निगहवान बन गया । उन्होंने उनके ख्यालों की ऐसी रक्षा की कि फिर कभी उनको अचेतन तौर पर – उनका ख्याल नहीं आया।

## 2. घर का वातावरण–

अमृता जी के लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में उनके घरेलू वातावरण की अहं भूमिका रही है। उनका घर किताबों से भरा हुआ था। बहुत सी किताबों का वातावरण धार्मिक था, समाधि में लीन ऋषियों की भांति /पर कई ऐतिहासिक पुस्तकों का वातावरण ऐसा भी था, जिनमें किसी मेनका या उर्वशी के आगमन से ऋषियों की समाधि भंग हो जाती थी। यह दूसरे प्रकार की पुस्तकें ऐसी थी, जिन्हें पढ़ते समय उनकी किसी पंक्ति में से निकलकर अचानक उनका सोलहवां बरस उनके सामने आ खड़ा होता था। अमृता जी कविताएँ लिखने लगी थीं और हर कविता उन्हें वर्जित इच्छा की तरह लगती थी। किसी ऋषि की समाधि टूट जाए तो भटकने का शाप उसके पीछे पड़ जाता है– इसलिए वह भी उनकी तरह उनके पिताजी से सहम जाता था, और उनके पास से हटकर किसी दरवाजे के पीछे जाकर खड़ा हो जाता था, और उसे छिपाए रखने के लिए वे एक क्षण जो मनमर्जी की कविता लिखती थी, दूसरे क्षण फाड़ देती थीं और पिता के सामने फिर सीधी – सादी और आज्ञाकारी बच्ची बन जाती थी।3

## 3.साहिर लुधियानवी की शायरी सी रंगत –

साहित्य सृजन में साहिर जी का योगदान बहुत ही सराहनीय रहा है । अमृता जी, साहिर को अपने साये के रूप में मानती रही हैं। एक लम्बा और सांवला – सा साया था, जब मैंने चलना सीखा तो साथ चलने लगा।''4 साहिर के इंतजार पर वे लिखती हैं–''इस तरह हफ्ते गुजर जाते महीने गुजर जाते, कोई समागम होता, तो मैं साहिर की आवाज सुन सकती थी, और जब कभी वो आ जाता, मेरी काली रातें भी सपनों के पैरों तले चांदनी बिछा देती। ''एक दिन वह भी आया साहिर के हाथ में एक कागज था उनकी नज्म का । उन्होंने नज्म पढ़ी और वह कागज अमृता जी को देते हुए जाने क्यों साहिर ने कहा–''इस नज्म में जिस लड़की का जिक्र है, वो जगह मैंने कभी देखी नही और नज्म में जिस लड़की का जिक्र है, वो लड़की कोई .....'' जब अमृता जी कागज लौटाने लगी, तो साहिर ने कहा–''यह मैं वापस ले जाने के लिए नहीं लाया । 5 तब रात

को आसमान पर के तारे उनके दिल की तरह धड़कने लगे और फिर जब वे कोई नज़्म लिखती, लगता उसे खत लिख रही हों। अचानक कई पतझड़े एक साथ आ गईं, साहिर ने पहली बार अमृता जी की नज़्में मांगी और उनकी एक तस्वीर मांगी, ''फिर अखबारें किताबतें जैसे मेरे डाकिए हो गईं और मेरी नज़्म मेरे खत हो गए उसकी तरफ।''6 इस तरह अमृता जी के साहित्यिक लेखन को सामने लाने में सहिर का अमूल्य योगदान रहा है।

4.सज्जाद हैदर का पड़ौसी सौन्दर्य बोध–

प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष रूप से साहित्य सृजन की प्रेरणा अमृता जी को सज्जाद से भी मिली है। ''वारिस शाह से, कविता से पहले देश के बंटवारे के बारे में एक और कविता अमृता जी ने लिखी थी–'पड़ोसी सौन्दर्य 'और लिखते ही सज्जाद को भेज दी थीं। वह कविता पंजाबी में अमृता जी के पास से खो गई इसलिए कभी उनकी भाषा में नहीं छपी, पर सज्जाद ने खत में लिखी हुई कविता का अंग्रेजी में अनुवाद किया और वह 'पाकिस्तान टाइम्स' में छपी थी। कुछ वर्ष बाद साहिर से मुलाकात पर अमृता जी ने एक नज़्म लिखी सात 'बरस' साहिर देश के विभाजन के समय पाकिस्तान नहीं गया था (गया था, पर वहाँ रहा नहीं),वे हिन्दुस्तान में थे, पर सात बरस उनसे अमृता जी की मुलाकात नहीं हो सकी थी। सात बरस के बाद मिले, तो अमृता जी ने कविता लिखी, वह छपी, तो किसी तरह पाकिस्तान भी पहुंच गई । सज्जाद ने पढ़ी और अमृता जी को खत लिखा– ''मैं तुमसे मिलने के लिए हिन्दुस्तान आना चाहता हूँ पन्द्रह, बीस दिन की छुट्टी लेकर । तुम बड़ी उदास लगती हो। मैं तुमसे 'उसकी बात करूँगा, जिसके लिए तुमने 'सात बरस' कविता लिखी।''7 इस तरह से अमृता जी को सांत्वना देते हुए और उनके लेखन में सज्जाद ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, एक सच्चे दोस्त की तरह।

5. रवीन्द्रनाथ ठाकुर का महामानवीय व्यक्तित्व –

अमृता जी की मुलाकात जब रवीन्द्रनाथ ठाकुर से हुई थी, तब वे बहुत छोटी थी। कविताएँ तब भी लिखती थी, पर बचकानी –सी। उन्होंने जब एक कविता सुनाने के लिए कहा, तो सकुचाकर सुनाई थी, पर उन्होंने जो प्यार और ध्यान दिया था, वह कविता के अनुरूप नहीं था, उनके अपने व्यक्तित्व के अनुरूप था। उसका प्रभाव अमृता जी पर गहरा हुआ, और फिर जब रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जन्म – शताब्दी मनाई जाने वाली थी, तब अमृता जी ने उन पर एक कविता लिखना चाही । कुछ पंक्तियां लिखी भी, पर तसल्ली नहीं हुई । फिर वे मास्को चली गईं (1961में ) वहां जिस होटल में ठहरी थी, उसके सामने मायकोव्स्की का बुत बना हुआ था, और जिस जगह वह होटल था , उसका नाम गोर्की स्ट्रीट था एक रात की बात लगभग दस बजे होंगे, अमृता जी ने खिड़की से देखा कि एक जनसमूह मायकोव्स्की के बुत के गिर्द इकट्ठा हैं। ज्ञात हुआ कि कई नौजवान कवि प्रायः रात के समय वहां आकर खड़े हो जाते हैं, और बुत के चबूतरे पर खड़े होकर कभी वे मायकोव्स्की की कोई कविता पढ़ते हैं, और कभी अपनी । रास्ता चलते लोग उनके इर्द – गिर्द आकर खड़े हो जाते हैं, और कविताएँ सुनते हैं, फरमाइशें भी करते हैं, और इस प्रकार यह खुला कवि – सम्मेलन आधी रात तक चलता रहता है। अमृता जी भी कुछ देर के लिए कोट पहनकर इस खुले कवि–सम्मेलन में चली गईं । फिर जब वे अपने कमरे में लौटीं, तो उनके सामने रवीन्द्रनाथ ठाकुर का चेहरा भी था, मायकोव्स्की का भी, और गोर्की का भी । सारे चेहरे मिश्रित– से हो गए, जैसे एक हो गए हों, और उस रात रवीन्द्रनाथ ठाकुर वाली उनकी कविता पूरी हो गई –

''महरम इलाही हुस्न दी कासद मनुखी इश्क दी
एक कलम लाफानी तेरी, सौगात फानी जिस्म दी''8

इस प्रकार से ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा, जो उनसे मिला हो और उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए था बिना रहा हो। ऐसी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति से अमृता जी मिलकर प्रभावित हुए बिना कैसी अछूती रह सकती थीं।

6. वारिसशाह

अमृता जी ने वारिसशाह से प्रभावित होकर एक काल्पनिक व्यक्तित्व का कलात्मक जादू लिखी हैं– 'वारिसशाह से' । वारिसशाह की पंक्तियाँ उनके जेहन में घूम रही थी– ''भला मोए ते बिछड़े कौन मेले अर्थात् जो मर चुके, जो बिछुड़ चुके हैं, उनसे कौन मिलन कराए।9 अमृता जी को लगा वारिसशाह कितना बड़ा कवि था, वह हीर के दुःख को गा सका । आज पंजाब की एक बेटी नहीं लाखों बेटियां रो रही हैं, आज इनके दुःख को कौन गाएगा? उन्हें वारिसशाह के सिवाय और कोई ऐसा नहीं लगा, जिसे संबोधन करके वे यह बात करती। 1947 ई. की उस रात चलती हुई गाड़ी में हिलते और कांपते कलम से अमृता जी ने एक कविता लिखी–

'' अज्ज आक्खां वारिसशाह नूं किते कबरां बिच्चों बोल
ते अज्ज किताबे–इश्क दा कोई अगला वरका खोल...।
इक्क रोई सी धी पंजाब दी, तू लिख लिख मारे बैन
अज्ज लक्खां धीयां रोन्दियां तैनुं वारिस शाह ने कहन
उठ दर्दमंदा दिय दर्दिया ! उठ तक्क अपणा पंजाब
अज्ज बेल्ले लाशा बिच्छियां ते लहू दी भरी चिनाव...
अर्थात् आज वारिस शाह से कहती हूं अपनी कब्र में से बोलो
और इश्क की किताब का कोई नया पृष्ठ खोलो
पंजाब की एक बेटी रोई थी, तूने लम्बी दारतान लिखी
आज लाखों बेटियां रो रही हैं, वारिस शाह तुमसे कह रही हैं
ऐ दर्दमंदों के दोस्त! अपने पंजाब को देखो
वन लाशों से अंटे पड़े हैं चिनाव लहू से भर गया है...।10

कुछ समय बाद यह कविता छपी, पाकिस्तान भी पहुंची और कुछ देर बाद जब पाकिस्तान में फैज़ अहमद फैज़ की किताब छपी, उसकी प्रस्तावना में अहमद नदीम कासमी ने लिखा कि यह किताब उन्होंने जब पढ़ी थी, जब वह जेल में थे। जेल से बाहर आकर भी देखा कि लोग इस कविता को जेबों में रखते हैं, निकालकर पढ़ते हैं, और रोते हैं। फिर 1972 ई.में जब अमृता जी लंदन गईं, तो वहां बी.बी.सी. के एक कमरे में किसी ने पाकिस्तान की शायरा सहाब कजलबाश से मुलाकात करवाई । सहाब के पहले शब्द थे– ''अरे, ये तो अमृता हैं, जिन्होंने वह कविता लिखी थी– वारिसशाह, इनसे तो गले मिलेंगे ....'' 11 पर यही कविता थी, तब पंजाब में कई पत्र– पत्रिकाएं अमृता जी के लिए तोहमतों से भर गई थीं। सिक्खों को यह आपत्ति थी, कि यह कविता वारिसशाह को संबोधन क्यों की, गुरूनानक को संबोधन करके लिखना चाहिए थी, और कम्युनिस्ट कहते थे कि लेनिन या स्टालिन को संबोधन करके क्यों नहीं लिखी ? यहां तक कि इस कविता के विरूद्ध भी कई कविताएं लिखी गईं । अमृता जी

के मन में तो हीर की पीड़ा का गायक वारिसशाह बसा था जो न सिख था और मुसलमान और न ही कम्युनिस्ट या कोई धार्मिक । वहाँ तो पीड़ा ही प्रधान थी।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपर्युक्त तत्व ही अमृता जी के साहित्य सृजन की प्रेरणा बने ।

## संदर्भ – ग्रन्थ


1. अमृता प्रीतम, रसीदी टिकट, पृ0 16.
2. वही, पृ0 125–126.
3. वही, पृ0 15–16.
4. वही, पृ0 18.
5. वही, पृ0 19.
6. वही, पृ0 20.
7. वही, पृ0 94.
8. वही, पृ0 98.
9. वही, पृ0 24.
10. वही, पृ0 25.
11. अमृता प्रीतम, रसीदी टिकट, पृ0 25.
12. अमृता प्रीतम, चुने हुए उपन्यास